NEERAJ®

M.H.D.-1

हिन्दी काव्य–1

(आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Shanti Swaroop Gupt,* **M.A. (Hindi), Ph.D.**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 450/-

Content

हिन्दी काव्य-1

(आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2

Question Paper—December-2023 (Solved) 1-2

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-6

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-3

Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-3

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

खण्ड-1 आदि काव्य

1. पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, भाषा और काव्यरूप 1

2. पृथ्वीराज रासो का काव्यत्व 12

3. विद्यापति और उनका युग 19

4. गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली 22

खण्ड-2 भक्ति काव्य-1 (निर्गुण काव्य)

5. कबीर की विचार चेतना और प्रासंगकिता 54

6. कबीर का काव्य-शिल्प 75

7. सूफी मत और जायसी का पद्मावत 86

8. पद्मावत में लोक परंपरा और लोक जीवन 112

खण्ड-3 भक्ति काव्य-2 (सगुण काव्य)

9. भक्ति आंदोलन के संदर्भ में सूर का महत्त्व 129

10. सूरदास के काव्य में प्रेम 143

11. मीरा का काव्य और समाज 177

12. मीरा का काव्य सौंदर्य 187

13. तुलसीदास के काव्य में युग संदर्भ 195

14. एक कवि के रूप में तुलसीदास 199

खण्ड-4 रीति काव्य

15. बिहारी के काव्य का महत्त्व 235

16. घनानंद के काव्य में स्वच्छंद चेतना 261

17. पद्माकर की कविता 293

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

हिन्दी काव्य-1

(आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

M.H.D.-1

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल चार प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) दिव मंडन तारक सयल सर मंडन कमलानु।
जस मंडन नर भर सयल महि मंडन महिलानु॥
महिलहि मंडन न्रिपति ग्रिह कनक कंति ललनानि।
तिहि उप्परि संजोगि धर रख्यो वलि वानि॥

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत दोहा कवि चंदबरदाई रचित 'पृथ्वीराज रासो' के 'कनवज्ज समय' से लिया गया है। पृथ्वीराज द्वारा संयोगिता का अपहरण कर उसे अपने महल में लाने और प्रेम क्रीड़ा में डूबने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या–स्वर्ग के समान सजे महलों में सरोवरों में खिले छोटे कमल ऐसे लग रहे है। मानो वे सभी को तारने वाले लग रहे हैं।

उसी प्रकार महल सजे हैं, उनकी शोभा निराली है। सजे हुए महलों में राजा सोने के समान कांति वाली अपनी रानी के साथ प्रेम में रत हैं। इन महलों की शोभा संयोगिता अपने सौंदर्य से और बढ़ा रही है।

विशेष–1. अपभ्रंश भाषा है।

2. संयोग शृंगार रस की छटा है।

3. भ्रांतिमान अलंकार है।

(ख) तोर हीरा हिराइल बा किचड़े में,
कोई ढूँढ़ै पूरब कोई ढूँढ़ै पश्चिम
कोई ढूँढ़ै पानी-पथरे में।
दास कबीर ये हीरा को परखै
बाँध लिहलै जीयरा के अँधरे में।

उत्तर–प्रसंग–प्रस्तुत दोहा कबीर द्वारा रचित है। इसमें कवि ने ईश्वर रूपी हीरे को इधर उधर ढूंढने वालों पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या–कवि कहते हैं कि तेरा हीरा कीचड़ में गिर कर खो गया है। कोई उसे पूरब में ढूँढ़ रहा है और कोई पश्चिम में और कोई पानी और पत्थर में। लेकिन 'कबीरदास' इस हीरे का मूल्य जानते हैं और उन्होंने उसे अपने दिल की गाँठ में बाँध लिया है।

विशेष–1. दोहा छंद है।

2. भाषा व्यंग्य पूर्ण है।

(ग) आगम, वेद, पुरान बखानत मारग कोटि न जाहिं न जाने।
जे मुनि ते पुनि आपुहिं आपको ईसु कहावत सिद्ध सयाने॥
धर्म सबै कलिकाल ग्रसे, जप, जोग, बिरागु लै जीव पराने।
को करि सोचु मरै 'तुलसी' हम जानकीनाथ के हाथ बिकाने॥

उत्तर–प्रसंग–प्रस्तुत पद तुलसीदास रचित कवितावली से लिया गया है। पद में कवि ने कलयुग में धर्म के बदलते रूप और दिखावे की बढ़ती प्रवृत्ति को उजागर किया है। विदेशी भाषाओं के प्रभाव से संस्कृत ज्ञान कम हो गया था। लोगों ने विवेक से काम लेना बंद कर दिया था। केवल अंधसत्ता ही उन्हें प्रेरित करती थी। इससे बिना किसी योग्यता के जो भी गुरू बनना चाहता था, बन जाता था। अज्ञान का अखंड राज्य था। इसी के संदर्भ में तुलसी दास ने कवितावली में लिखा है–

व्याख्या–शास्त्र, वेद और पुराय वर्णन करते हैं कि मोक्ष-साधन के अनेक उपाय हैं, परन्तु वे तो समझ नहीं पाते और जो मुनिगण हैं वे अपने ही को ईश्वर और सयाने सिद्ध कहलवाते हैं, परन्तु इस कलियुग ने सब धर्मों को बस लिया है; जाप, योग, विराग आदि तो डर के मारे लोप हो गए हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

हिन्दी काव्य-1

(आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

M.H.D.-1

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर देने हैं।* ***प्रथम*** *प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) पानी बिच मीन पियासी।
मोहिं सुन सुन आवै हाँसी॥
घर में वस्तु नजर नहिं आवत।
बन बन फिरत उदासी॥
आत्मज्ञान बिना जग झूँठ।
क्या मथुरा क्या कासी॥

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-79, व्याख्या-3

(ख) धूत कहौ, अवधूत कहौ,
रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब,
काहू की जाति बिगार न सोऊ।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को,
जाकौ रुचि सो कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो,
लैबो को एकु न दैबे को दोऊ॥

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-228, 'कवितावली : उत्तरकांड की सप्रसंग व्याख्या (1)'

(ग) हमारे निर्धन के धन राम।
चोर न लेत घटत न कबहूँ आवत गाढ़े काम॥
जल नहिं बूड़त अगिनि न दाहत है ऐसो हरि नाम।
बैकुंठनाथ सकल सुख दाता सूरदास सुख धाम॥

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-162, व्याख्या-3

(घ) भए अति निठुर मिटाय पहचानि डारी,
याही दु:ख हमै जक लागी हाय हाय है,
तुम तौ निपट निरदई, गई भूलि सुधि
हमैं सूल सेलति सो क्यों हूँ न भुलाय है।

उत्तर–प्रसंग–प्रस्तुत छंद कवि घनानंद के छंदों में से लिया गया है। कवि अपने प्रिय की निष्ठुरता और उपेक्षा से दु:खी होकर उसे ताने दे रहा है।

व्याख्या–कवि अपने प्रिय (सुजान) को उलाहना देते हुए कहता है कि वह बहुत निष्ठुर हो गया है। उसने तो उसको पहचानना भी भुला दिया है। पुराने मधुर सम्बन्ध को उसने हृदय से निकाल दिया है। यही कारण है कि बेचारा कवि दिन रात हाय-हाय पुकारता रहता है। कवि कहता है–तुम तो पूरी तरह निर्दयता पर उतर आए, हमें भुला दिया, परन्तु तुमने हमें जो उपेक्षा के काँटों से छेदा है। उस असहनीय चुभन को हम कैसे भूल जाएँ। पहले तो हमें बड़ी मधुर-मुधर बातों से ठग लिया और अब ऐसे निष्ठुर व्यवहार से हमारे जी को जला रहे हो। भला यह कैसा न्याय है? यह तो सरासर घोर अन्याय है। तुमने यह सुपरिचित कहावत तो सुनी होगी कि जो दूसरों को कलपाता है, पीड़ा पहुँचाता है, वह स्वयं भी सुखी नहीं रह पाता।

विशेष–1. जब कोई प्रिय प्रेमी को पहचानने से भी इनकार कर दे तो मधुर अतीत को छाती से लगाकर जीने वाले प्रेमी पर क्या बीतेगी? कवि का हाल कुछ ऐसा ही है। निष्ठुर प्रिय ने पहचान भी भुला दी है। अन्य रीतिकालीन कवियों के कल्पित वियोग वर्णन और घनानंद के इस स्वयं भोगे गए, वियोग वर्णन में भला क्या समानता हो सकती है? इसकी हर वेदना में सचाई है।

2. सरल शब्दों में हृदय की घनी पीड़ा को सम्पूर्णता से व्यक्त कर पाना, घनानंद की ही सामर्थ्य है।

3. मुहावरों और लोकोक्तियों से भाव प्रकाशन प्रभावशाली बन गया है। 'हाय-हाय' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार, 'निपट निरदई गई', सूल सेलनि', बोल बोलि', 'जिय जारत' में अनुप्रास अलंकार, तथा 'कलपाय' में यमक अलंकार है।

प्रश्न 2. 'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, प्रश्न 1

प्रश्न 3. विद्यापति की भाषा का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-37-41, प्रश्न 7

प्रश्न 4. कबीर की कविता में निहित रहस्यवाद को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-66, प्रश्न 7

NEERAJ PUBLICATIONS

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

हिन्दी काव्य - 1

आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य

खण्ड-1 **आदि काव्य**

1 पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, भाषा और काव्यरूप

प्रश्न 1. रासो शब्द की व्युत्पत्ति तथा पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता के संबंध में विभिन्न विद्वानों के विचार प्रस्तुत करते हुए आप अपना मत बताइये।

उत्तर–रासो-काव्य हिन्दी के प्राचीनतम काव्य हैं जो धीरे-धीरे इतिहास की अंधकाराच्छन्न गुहा से निकलकर आलोक में आ रहे हैं। अत्यन्त प्राचीन काव्य होने के कारण न केवल रासो-काव्यों के संबंध में ही अनेक भ्रान्तियों ने जन्म लिया है, अपितु स्वयं 'रासो' शब्द के संबंध में भी अनेक भ्रामक धारणाएँ विद्वानों द्वारा व्यक्त की गई हैं।

प्रसिद्ध इतिहासकार गार्सा द तासी के अनुसार रासो शब्द की व्युत्पत्ति राजसूय शब्द से हुई है, परन्तु न सभी चरित-काव्यों में राजसूय यज्ञ का वर्णन है और न संदेशरासक, बीसलदेव रासो आदि काव्यों में। इनमें केवल वीर रस का वर्णन है।(उनमें अन्य रसों का भी समावेश है), अतः यह मत स्वीकार्य नहीं।

नरोत्तम स्वामी ने 'रसिक' शब्द से रासो की व्युत्पत्ति मानी है–रसिक : रासउ : रासो। उन्होंने रसिक का अर्थ कथा या काव्य माना है। यह व्युत्पत्ति रासो के संबंध में तो ठीक है, परन्तु जिन काव्यों का नाम रासक या रास हैं, उनकी संगति इस मत से नहीं बैठती।

कुछ विद्वानों ने 'रहस्य' शब्द से और कुछ ने 'रसिया' शब्द से रासो का संबंध जोड़ा है। पर रासो काव्यों में न तो गूढ़ रहस्यमयता ही मिलती है और न केवल भद्दा स्थूल शृंगार ही। ये काव्य न तो एकान्त रूप से शृंगारी काव्य हैं और न रहस्यवादी। अतः ये मत भी उपयुक्त प्रतीत नहीं होते।

आचार्य शुक्ल ने रासो की व्युत्पत्ति के लिए रसायन शब्द प्रस्तुत किया था और प्रमाण के लिए निम्न पंक्ति 'नाल्ह रसायन आरम्भई' प्रस्तुत की थी। उनके अनुसार रसायन का अर्थ था 'काव्य', पर शुक्ल जी का मत भी आज अमान्य हो चुका है।

पं0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'रासक' शब्द से रासो की व्युत्पत्ति मानी है। उनका कथन है कि जैसे संस्कृत का ***''घोटक''*** शब्द ब्रज में 'घोड़ों' हो जाता है, उसी प्रकार 'रासक' का 'रासो' हो गया है। उनके अनुसार रासक का अर्थ काव्य था। शुक्ल जी के मत के समान इनका मत भी विद्वानों द्वारा स्वीकार नहीं किया गया।

बैजनाथ खेतान ने रासो का अर्थ राजस्थानी भाषा में ***ऊहम, युद्ध*** अथवा ***प्रेमीजनों*** का झगड़ा बताते हुए रासो को शुद्ध राजस्थानी शब्द मानते हुए कहा है कि रासो शब्द की व्युत्पत्ति के लिए अन्यत्र जानने की आवश्यकता नहीं। परन्तु ***डा0 दशरथ शर्मा*** ने उनके मत का विरोध करते हुए कहा है कि राजस्थानी में रासो शब्द अपने मूल अर्थ में नहीं बल्कि ***लाक्षणिक*** अर्थ में झगड़े के अर्थ में उसी प्रकार प्रयुक्त हुआ है, जिस प्रकार ***महाभारत*** शब्द लड़ाई के अर्थ में हुआ है। अतः रासो की व्युत्पत्ति रासो से नहीं, बल्कि किसी अन्य शब्द से मानी जानी चाहिए।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी रासो की व्युत्पत्ति ***'रासक'*** शब्द से मानते हैं, जो एक ***छन्द विशिष्ट*** अथवा ***काव्य-भेद*** के लिए प्रयुक्त होता था। उनका कथन है कि मूल रूप में अपभ्रंश काव्य इसी रासक छन्द तथा इसी काव्य-भेद में लिखे जाते थे। कालान्तर में किसी भी गेय छन्द वाले काव्य को रासक या रासो कहा जाने लगा जैसे बीसलदेव रासो। उनके मतानुसार आरम्भ में ये काव्य ***प्रेम-प्रधान*** ही होते थे, बाद में इनमें वीरों की गाथाएँ भी जोड़ दी गईं।

चन्द्रबली पाण्डेय ने रासो की ***पुष्पिका*** में 'रासक' शब्द देखकर यह कल्पना की कि रासो ***संस्कृत*** के 'रासक' शब्द से निकला है, जिसका अर्थ ***उपरूपक*** का एक भेद है। उनका तर्क यह है कि पृथ्वीराज रासो के आरम्भ में चन्द्र और उसकी पत्नी के मध्य उसी प्रकार का वार्तालाप विद्यमान है, जिस प्रकार उपरूपक के आरम्भ में नट-नटी के बीच वार्तालाप होता है। उनके तर्क के विरुद्ध इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि अनेक रासो काव्यों में जैसे 'खुमान रासो' या 'बीसलदेव रासो' में यह नाटकीय पद्धति नहीं है।

इन सब विद्वानों के मतों में चन्द्रबली पाण्डे और हजारीप्रसाद द्विवेदी के मत सर्वाधिक तर्क-सम्मत प्रतीत होते हैं। इन दोनों के अतिरिक्त विश्वनाथ प्रसाद मिश्र भी रासो की व्युत्पत्ति रासक शब्द से मानते हैं। इन सभी विद्वानों के मतों का ***समाहार*** बड़ी विद्वतापूर्ण शैली में जो अधिक तर्कपूर्ण है, ***डा0 दशरथ शर्मा ने किया है***। उनके अनुसार ***रासो शब्द का प्रयोग कोई आकस्मिक घटना नहीं है, उसका एक क्रमिक इतिहास है*** और वह इस प्रकार से है–***श्रीमद्भागवत, हरिवंश पुराण तथा विष्णु पुराण में रास*** का उल्लेख मिलता है। यह रास ***शृंगार-गान-अभिनय*** से युक्त एक प्रकार की ***नृत्य-लीला*** होती थी। इन रासों के कालान्तर में ***तीन भेद*** हुए–प्रथम जिसमें नृत्य की विशेषता होती थी, ***जैसे लगुड रास,*** द्वितीय ***श्रव्य रास,*** जैसे ***चरचरी*** तथा ***अभिनय रास,*** जिनमें अभिनय की प्रधानता होती थी। इन तीनों में ***श्रव्य रास*** सबसे अधिक ***जनप्रिय*** होते थे। अतः ***जैन आचार्यों*** ने ऐसे प्रबन्धों की रचना की जिनमें श्रव्य रास के सभी गुण विद्यमान हों। ***अभिनय रास*** से उपरूपक का वह भेद आविर्भूत हुआ जिसे ***'रासक'*** नाम दिया गया। अतः हजारीप्रसाद द्विवेदी इत्यादि ने जो ***रासक से रासो की उत्पत्ति मानी है,*** वह उचित नहीं। वस्तुतः ***रास शब्द से रासक शब्द बना है***। जहाँ तक रासो शब्द का प्रश्न है, वह रास शब्द का ही ***एक वचनान्त*** रूप है और इसका प्रयोग प्रबंधों में अनेक बार हुआ है। प्रारंभ में ये प्रबंध काव्य या रासो काव्य ***गेय*** और ***अभिनेय*** होते थे। उनमें कभी ***कोमल भाव,*** कभी ***पुरुष*** भाव और कभी दोनों का सम्मिश्रित रूप होता था। इसी परम्परा का विकास रासो-काव्यों में हुआ। कदाचित् आरम्भिक अभिनेय तथा गेय रासों में शृंगार वर्णन के साथ-साथ वीरों की पराक्रम तथा शौर्य गाथाएँ और जोड़ दी गईं तथा उन्हीं के विकसित रूप की परिणति रासो प्रबंध-काव्यों में हुई।

पृथ्वीराज रासो हिन्दी साहित्य का ***प्रथम महान् ग्रन्थ*** तथा उसके रचयिता चन्द हिन्दी के ***प्रथम महाकवि*** माने जाते रहे हैं। परन्तु अब विद्वानों में रासो की प्रामाणिकता के संबंध में मतभेद हो जाने से रासो तथा उनके कवि दोनों ही अपने पूर्व गौरव से वंचित होते जा रहे हैं। रासो की प्रामाणिकता के संबंध में ***तीन प्रकार*** के मत हैं। कुछ विद्वान् जिनमें ***कर्नल टाड, एफ0 एस0 ग्राउज, गार्सा द तासी, मोतीलाल मेनारिया, जान वीम्स, हार्नले, मिश्रबन्धु, श्यामसुन्दरदास तथा मोहनलाल विष्णुलाल पंडया*** उल्लेखनीय हैं–इसे प्रामाणिक मानते हैं। दूसरा वर्ग जिसमें ***डा0 बूलर, गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, शुक्ल जी तथा डा0 रामकुमार वर्मा*** प्रमुख हैं–इसे जाली मानता है। तीसरा वर्ग उन विद्वानों का है जो इसे अर्द्ध-प्रामाणिक मानते हैं। इनमें ***डा0 सुनीतिकुमार चटर्जी, मुनिजिन विजय, डा0 दशरथ शर्मा तथा डा0 हजारीप्रसाद*** उल्लेखनीय हैं। डा० बूलर को काश्मीर में प्राचीन ग्रन्थों की खोज करते हुए जयानक कवि रचित 'पृथ्वीराज विजय' नामक काव्य की एक खण्डित प्रति मिली जिसकी घटनाएँ, संवत् , नाम और वंशावलियाँ अधिक इतिहाससम्मत थीं तथा जो 'पृथ्वीराज रासो' में दिए गए तथ्यों से भिन्न थीं। अतः 'रासो' की प्रामाणिकता में संदेह प्रकट किया गया। आगे चलकर ओझा जी ने टाड इत्यादि विद्वानों के मत को अस्वीकार करते हुए इसे अप्रामाणिक सिद्ध करने के लिए अथक परिश्रम किया और निम्न तर्क प्रस्तुत किए–

1. पृथ्वीराज रासो के अनुसार आबू के शासक जेन और सबक थे। इसका कोई उल्लेख तत्कालीन शिलालेखों में नहीं मिलता। इतिहास-सम्मत तथ्य तो यह है कि उस समय आबू पर धारावर्ष परमार का शासन था।

2. रासो के अनुसार चौहानों की उत्पत्ति ***अग्निवंशीय*** क्षत्रियों से है। किंतु ***'पृथ्वीराज विजय'***, जिसे डा० बूलर ने काश्मीर में उपलब्ध किया और जो निश्चय ही अधिक प्रामाणिक ग्रंथ है, क्योंकि उसमें उद्धृत घटनाएँ तथा तिथियाँ शिलालेखों से मिलती हैं, के अनुसार चौहान ***सूर्यवंशी*** क्षत्रिय हैं। फिर संवत् 1460 तक चौहानों को सूर्यवंशी क्षत्रिय मानने के भी प्रमाण हैं।

3. पृथ्वीराज रासो में दी हुई चौहानों की ***वंशावली न 'विजोलिया'*** के शिलालेख से मेल खाती है, न ***'पृथ्वीराज विजय'*** में दी हुई वंशावली से और न ***'हम्मीर काव्य'*** से। रासो के लाहौर वाले रूपांतर में चौहानों की उत्पत्ति ब्रह्मा के यज्ञ से मानी है, परन्तु ***लघु रूपान्तर*** इसके विषय में कुछ नहीं कहता।

4. रासो के अनुसार पृथ्वीरास की माता का नाम ***कमला*** था। परन्तु 'पृथ्वीराज विजय' और 'हम्मीर' काव्य दोनों में उसका नाम ***कर्पूर देवी*** मिलता है। इतिहास से यह भी सिद्ध हो चुका है कि पृथ्वीराज की माँ अनंगपाल की लड़की नहीं थी और न ***जयचंद*** अनंगपाल का दौहित्र। रासो का यह तथ्य कि ***अनंगपाल*** दिल्ली का राजा था और उसने पृथ्वीराज को गोद लिया था, भी गलत है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

5. रासो के अनुसार पृथ्वीराज की बहिन ***पृथा कुमारी*** का विवाह मेवाड़ के राजा ***समरसिंह*** से हुआ था, परन्तु ऐतिहासिक खोजों से यह गलत सिद्ध होता है । समर सिंह के समय का प्रथम शिलालेख संवत् 1330 का और अन्तिम संवत् 1352 का मिलता है । अतः समरसिंह पृथ्वीराज के लगभग 109 वर्ष बाद तक रहे ।

6. रासो के अनुसार ***गुजरात*** के राजा ***भीमसिंह*** पृथ्वीराज के हाथों मारे गए, पर शिलालेखों में उनका जीवित रहना सं० 1272 तक अर्थात् पृथ्वीराज के 50 ***वर्ष*** बाद तक सिद्ध होता है ।

7. रासो के अनुसार पृथ्वीराज ने 11 वर्ष से 36 वर्ष तक की आयु में 14 ***विवाह किए,*** पर इतिहास के अनुसार पृथ्वीराज की मृत्यु 30 वर्ष की अवस्था में ही हो गयी थी ।

8. जयचंद का ***राजसूय यज्ञ, संयोगिता स्वयंवर*** आदि रासो में वर्णित घटनायें भी इतिहास-सम्मत नहीं हैं, क्योंकि शिलालेखों में उनका कोई संकेत नहीं मिलता ।

9. रासो के अनुसार चित्तौड़ के रावल समरसिंह का ज्येष्ठ पुत्र कुम्भा राज्य न मिलने पर सहायता के लिए ***बीदर के बादशाह*** के पास गया था । परन्तु उस समय तक तो मुसलमान दक्षिण में पहुँचे भी न थे । अतः यह भी गलत है ।

10. ***शहाबुद्दीन गौरी*** का पृथ्वीराज के हाथों मारा जाना भी असत्य है, क्योंकि वह तो ***गक्खरों*** द्वारा संवत् 1263 में मारा गया था ।

11. रासो में लिखा है कि गौरी ***आबू*** की लड़ाई में ***परमार राजा*** द्वारा संवत् 1136 में पराजित हुआ । पर गौरी तो गद्दी पर ही संवत् 1230 में बैठा था ।

इस प्रकार रासो में उल्लिखित अनेक ऐसिहासिक घटनायें असत्य और कपोल-कल्पित हैं । इतना ही नहीं, रासो में दी हुई ***तिथियाँ*** भी गलत हैं । जैसे–

1. रासो के अनुसार ***पृथ्वीराज का जन्म सं०*** 1115 में हुआ । परन्तु शिलालेखों तथा फारसी इतिहासकारों के अनुसार उसकी जन्म-तिथि सं० 1217 है । इसी प्रकार पृथ्वीराज की मृत्यु रासो में सं० 1158 दी गयी है, जबकि इतिहास सं० 1248 मानता है ।

2. इसी प्रकार की तिथि-संबंधी अशुद्धियाँ ***बीसलदेव*** के सिंहासनारूढ़ होने, ***पृथ्वीराज के गोद लिए*** जाने, ***पद्मावती विवाह, संयोगिता स्वयंवर,*** आबू पर ***भीम चालुक्य का आक्रमण, कैमास की लड़ाई*** और ***गौरी की मृत्यु*** आदि घटनाओं के संबंध में भी पायी जाती हैं ।

रासो की भाषा की परीक्षा करने पर हमें और भी निराशा होती है । रासो में ***तीन प्रकार की भाषा है***–

1. अनुस्वरान्त भाषा जिसमें कोई स्थिरता नहीं है ।

2. ***आहुनिक साँचे*** में ढली हुई भाषा जो वर्तमान हिन्दी के अत्यंत निकट है ।

3. ***कवित्तें और दोहों*** की भाषा जो कृत्रिमता रहित है । कदाचित् यही चंद की मूल भाषा है । रासो में अरबी-फारसी के इतने अधिक शब्द हैं कि विश्वास नहीं होता कि यह इतना प्राचीन ग्रंथ है । ऐसे शब्द प्रायः ***दस प्रतिशत*** हैं और चंद के काल में इतने अरबी-फारसी शब्द किसी भी प्रकार व्यवहार में नहीं आ सकते थे । इसीलिए ***शुक्ल*** जी ने कहा था, ''यह ग्रन्थ न तो भाषा के इतिहास के और न ही साहित्य के जिज्ञासुओं के काम का है ।'' इस प्रकार ओझा जी आदि विद्वानों ने अपनी युक्तियों द्वारा पृथ्वीराज रासो को अप्रामाणिक सिद्ध किया । ***डा० हीरेन्द्र वर्मा ने भाषा-विज्ञान की दृष्टि से भी इसे प्रामाणिक नहीं माना***।

अपने प्राचीनतम ग्रन्थ को अप्रामाणिक सिद्ध होते देखना कुछ विद्वानों को सहन नहीं हुआ और उन्होंने ओझा जी की युक्तियों के विरोध में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए । ***इतिहास-***संबंधी भ्राँतियों के उन्होंने तीन कारण माने–

1. चंद ने अपने आश्रयदाता के शौर्य और विलास का ***अतिशयोक्ति पूर्ण*** वर्णन किया है, जिसके कारण गलतियाँ हो जाना स्वाभाविक है । चन्दं कवि था, न कि इतिहासकार ।

2. ओझा जी ने जिन्हें भ्राँति बताया है, वे भ्राँतियाँ नहीं, क्योंकि उनकी सत्यता ***'नागरी प्रचारिणी सभा'*** द्वारा प्रकाशित ***पट्टे-परवानों*** से सिद्ध होती है ।

3. यदि कुछ भ्राँतियाँ हैं भी, तो उनका कारण ***क्षेपक*** हैं, अतः हमें रासो की ***लघुतम प्रति को ही प्रामाणिक मानना चाहिए ।***

मिश्र बंधुओं ने रासो को प्रमाणिक सिद्ध करने के लिए कहा –

1. पृथ्वीराज रासो तथा बिजौलिया के शिलालेख में दी गई ***वंशावली*** का अंतर अत्यंत ***नगण्य*** है ।

2. शहाबुद्दीन की कई बार पराजय का उल्लेख यदि फारसी ग्रन्थों में नहीं है, तो वह ***फारसी इतिहासकारों की बेईमानी*** है ।

3. जिन घटनाओं का रासो में उल्लेख है, ***इतिहास*** में नहीं, उनके विषय में मिश्र बंधु कहते हैं कि इतिहास यह भी तो नहीं कहता कि ये घटनायें नहीं हुई थीं ।

मिश्र बंधुओं के तर्क अत्यंत दुर्बल हैं । अन्तिम दो तो बहुत ही ***हास्यास्पद*** हैं, क्योंकि इतिहास केवल उन्हीं घटनाओं अथवा व्यक्तियों का उल्लेख करता है जो हुए हैं ।

जहाँ तक अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन की बात है, वह कवि के लिए स्वाभाविक तो है, परन्तु ***इतिहास विरुद्ध*** घटनाओं तथा व्यक्तियों का वर्णन करना किसी भी प्रकार संगत नहीं ।

जहाँ तक ***क्षेपक*** का प्रश्न है, कुछ घटनायें जो इतिहास-विरुद्ध हैं, वे रासो की मूल कथावस्तु के साथ इतनी सम्बद्ध हैं कि उन्हें क्षेपक नहीं कहा जा सकता ।

डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन है कि रासो के वे 'समय' प्रामाणिक हैं, जिनमें शुक-शुकी संवाद है, पर डा० ***माताप्रसाद*** उनके विरुद्ध कहते हैं कि प्रक्षेपकार भी तो इन सर्गों की रचना में शुक-शुकी सम्वाद जोड़ सकते थे । उनका कहना है कि रासो का लघुतम पाठ ही प्रामाणिक है । उसमें उक्ति-शृंखला और छंद-शृंखला की पद्धति अपनायी गयी है ।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

जहाँ तक ***भाषा*** में अरबी-फारसी शब्दों के मिश्रण का प्रश्न है, ***डा0 श्यामसुन्दर दास*** ने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि चंद लाहौर का रहने वाला था, अतः अरबी-फारसी के शब्द उसकी कृति में आ जाना स्वाभाविक है । दूसरे, प्रक्षिप्त अंशों में प्रयुक्त अरबी-फारसी शब्दों की संख्या दस प्रतिशत कर दी है । यह तर्क भी कुछ अधिक पुष्ट नहीं है, क्योंकि प्रथम तो यह सिद्ध नहीं होता कि चंद के समय में लाहौर में अरबी-फारसी का प्रचुर प्रचार था । दूसरे, रासो के प्रत्येक ***समय*** में अरबी-फारसी के शब्द हैं और यह पता लगाना अत्यन्त कठिन है कि उसमें कितना अंश मूल और कितना प्रक्षिप्त है । ***मिश्रबंधुओं*** ने विविध शब्दावली के प्रयोग के संबंध में कहा था कि अर्वाचीन ***प्रयोग रासो की अर्वाचीनता के प्रमाण हैं, तो प्राचीन रूप उसकी प्राचीनता के ।*** परंतु जब हम एक ही छंद में शब्दों के विविध रूप देखते हैं, तो निश्चय ही कहना पड़ता है कि वे बाद में लिखे गए हैं। कुछ विद्वानों ने इसका कारण ***लिपिकार का दोष*** माना है, पर प्रत्येक प्रति में शब्द का वैसा ही रूप इस तर्क को भी खंडित कर देता है । इन्हीं सब बातों को केन्द्र में रखकर ***डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी*** ने लिखा है–"अब तक यही विश्वास किया जाता रहा है कि प्रक्षेपों के समुद्र में से मूल कविताओं के मोती चुन लेना असम्भव ही है ।"

मुनि जिनविजय के 'पुरातन प्रबंध संग्रह' में रासो में पाए जाने वाले चार छंद मिले हैं, जिनकी प्रामाणिकता असंदिग्ध है । इनकी भाषा परवर्ती अपभ्रंश या पुरानी हिन्दी के अत्यंत निकट है और उसमें प्राचीन ब्रज के तत्त्व भी प्रचुरता से मिलते हैं । अतः यह तो सिद्ध हो जाता है कि चन्द नाम के कवि पृथ्वीराज के दरबार में थे और उन्होंने पृथ्वीराज से सम्बन्धित ग्रंथ भी लिखा था । रासो का काव्य-रूप भी दसवीं शताब्दी का है और उसमें रासो काव्यों की प्रवृत्तियाँ–संवाद, कथानक-रूढ़ियाँ आदि उसे प्राचीन सिद्ध करती हैं । शब्दों का ***संयुक्ताक्षररूप*** तथा ***अनुस्वरांत*** होना भी रासो के प्राचीन होने की ओर संकेत करता है । अतः अब अधिकांश विद्वान् उसे अर्द्ध-प्रामाणिक मानते हैं । उनका मत है कि ***रासो मूल रूप में अत्यंत लघु ग्रंथ था ।*** रासो की लघुतम प्रतियों के मिलने के बाद तो यह बात और भी सत्य सिद्ध हो जाती है, क्योंकि उसमें सभी अनैतिहासिक बातों का अभाव है । अतः हमारा भी यही मत है कि रासो अपने लघुतम रूप में प्रामाणिक ग्रंथ हैं । विद्वानों ने निरर्थक तर्क-वितर्क के द्वारा इसके संबंध में भ्रांतियाँ उत्पन्न कर दी हैं । इस संबंध में ***डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी*** के निम्न शब्द अत्यंत संगत हैं–"इस निरर्थक मन्थन से जो दुस्तर फेनराशि तैयार हुई है, उसे पार करके ग्रन्थ के साहित्यिक रस तक पहुँचना हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी के लिए असम्भव-सा व्यापार हो गया है ।"

प्रश्न 2. पृथ्वीराज रासो के काव्यरूप पर विचार कीजिए।

अथवा

"पृथ्वीराज रासो सामन्त युग का प्रतिनिहि महाकाव्य है" इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

उत्तर–मध्यकाल में लिखे गये प्रबंधकाव्य काव्यरूप की दृष्टि से मिश्रित काव्यरूप थे । उसमें कथा-काव्य, चरित काव्य, आख्यायिका, रोमानी आख्यान (पंवारा) रासो कई रूपों का मिश्रण पाया जाता है । उसमें संस्कृत महाकाव्यों के लक्षण नहीं पाये जाते, जैसे छंदों का विधान, सर्ग-योजना, नायक आदि । पृथ्वीराज रासो भी प्राकृत-अपंभ्रश भाषाओं में लिखे गये प्रबंधकाव्यों की परम्परा में लिखा गया काव्य है। उसमें शुक-शुकी तथा कवि-पत्नी के संवाद कथा-काव्य की तरह हैं । कथा का नायक कल्पित होता था जैसे बाणभट्ट की 'कादम्बरी' का नायक, जबकि आख्यायिका का नायक ऐतिहासिक होता था जैसे बाणभट्ट के 'हर्षचरित्' का, इस दृष्टि से पृथ्वीराज रासो आख्यायिका है । वह चरितकाव्य है क्योंकि उसमें पृथ्वीराज का जीवन-चरित वर्णित है ।

यद्यपि कुछ आलोचकों ने पृथ्वीराज रासो को रोमांचक आख्यान कहा है क्योंकि उसके कथानक-विधान में आंतरिक गठन नहीं है, वह असम्बद्ध कथाओं का–नायक के विभिन्न विवाहों और उनसे सम्बद्ध युद्ध आदि प्रसंगों का संकलन है, इनमें विस्तार भी है । इन विवादों और युद्धों में कोई तार्किक प्रवाह या अंतःसूत्रता नहीं है ।

प्रश्न उठता है कि इन सब त्रुटियों के होते हुए भी पृथ्वीराज रासो को महाकाव्य का पद और प्रतिष्ठा क्यों प्राप्त हुई । सभी विद्वान मानते हैं कि उसका प्रामाणिक रूप उसका लघुतम पाठ है । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा डा० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार केवल दस प्रसंग ही चन्दबरदाई द्वारा लिखे गये थे, बाद में जोड़े गये अंशों के कारण ही वह बृहदकाय बन गया । यह लघु काव्य महाकाव्य कैसे बन गया ? इसका उत्तर हमें मिलता है इतिहास में, उत्तर भारत के राजनीतिक घटना-चक्र में । पृथ्वीराज चौहान दिल्ली के सिंहासन पर विराजमान होने वाला अंतिम हिन्दू शासक था । मुहम्मद गोरी के हाथों उसकी पराजय से एक युग का अंत हो गया और अन्तिम हिन्दू राजा होने के कारण हिन्दुओं में उनके प्रति आदर, गौरव व प्यार के भाव उमड़ पड़े । वह हिन्दुओं के नायक बन गये, अनेक निजंधरी (लीजेंडरी) कथाएं और किवंदत्तियां उनके साथ जोड़ दी गयीं । परिणाम यह हुआ कि जन-मानस की इस मनोवृत्ति के परिणामस्वरूप रासो के मूल पाठ में अनेक प्रक्षिप्त अंश जुड़ते चले गये । आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखते हैं–वह लोकचित्त की चंचल सवारी करता हुआ विकासशील महाकाव्य (epic of growth) बन गया । इस प्रकार इस छोटी सी काव्य-रचना को महाकाव्यात्मक गौरव और गरिमा प्राप्त हुई । यह युग-नायक की गाथा तथा जातीय-राष्ट्रीय इतिहास की महत्त्व रचना बन गया ।

www.neerajbooks.com